15

अपने साथ बुराई हो जाने पर भी सही काम करना (5:7-12)

मेरे आस-पास रहने वाले लोगों ने मेरे बारे में एक बात देखी होगी कि मुझे अपनी आलोचना पसन्द नहीं है! मुझे अच्छा नहीं लगता कि कोई मुझे बताए कि मैं गलत हूं, कि मैं किसी बात में नाकाम रहा हूं। लोग मेरे पास काम को आसान बनाते हुए कानाफूसी करेंगे, ''मुझे उम्मीद है कि आप थोड़ी *रचनात्मक* आलोचना की सराहना करेंगे।'' हो सकता है मैं इसकी सराहना करूं, पर मुझे यह पसन्द नहीं! रचनात्मक हो या न, है तो यह आलोचना ही। यदि आप मुझे परेशान देखना चाहते हैं तो मुझे इतना यकीन दिला दें कि आलोचना कमाई नहीं जाती। वाह! इससे सचमुच में चीज़ें अन्दर से खौलने लगती हैं।

जो मुश्किल बात हम सब के लिए है वह मनुष्य का नाज़ुक अहंकार है। एक पुरानी कहावत के शब्दों का इस्तेमाल करें, ''जुआरी होता, तो मैं यह शर्त लगा लेता कि मैं अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं हूं जो ऐसा महसूस करता है।'' उन भावनाओं और जज़्बातों के साथ हम सब को जूझना पड़ता है और सैकड़ों गीतों, फिल्मों, टेलीविज़न कार्यक्रमों तथा पुस्तकों का अधार वही है।

बेशक हम सब इस बात को समझते हैं कि हमें केवल आलोचना से ही परेशानी नहीं होती; उन परेशानियों का कारण असहनीय कार्य की परिस्थिति, घेरलू झगड़े (पति-पत्नी या माता-पिता से) या किसी मित्र द्वारा बुरा किए जाने के कई स्थान हो सकते हैं। याकूब 5 के संदर्भ में स्पष्ट लगेगा कि इन मसीही लोगों द्वारा सहा जाने वाला क्लेश और दुर्व्यवहार वह बुराई था जो वे धनवानों के हाथों सह रहे थे। जब आप धन के पापों पर विचार करते हैं (उनका सम्पत्ति बटोरना, मज़दूर को मज़दूरी न दे पाना, और निर्दोष लोगों को दोषी ठहराना और हत्या करना, 5:1-6), तो यह समझना कठिन नहीं लगता कि वे बदला लेने की कड़वाहट और भावनाओं से कितना भरे हो सकते हैं। उनकी प्रार्थनाएं प्रकाशितवाक्य 6:10 में सिंहासन के नीचे से पवित्र लोगों की चीखों की तरह सुनाई देती होंगी: ''हे स्वामी, हे पवित्र और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लहू का बदला कब तक न लेगा?'' परन्तु परमेश्वर के पास कड़वाहट और बदला लेने से भी बढ़िया विचार है, और याकूब उस वैकल्पिक विचार को प्रगट करने जा रहा है। याकूब हमें दिखाएगा कि अपने साथ बुरा होने पर विश्वास संसार से अलग कैसी प्रक्रिया देता है। याकूब जो निर्देश देता है वह चार आज्ञाओं के रूप में है। पहली दो आज्ञाएं सकारात्मक हैं, जबकि शेष दो नकारात्मक।

''धीरज धरो'' (5:7)

पहली आज्ञा आयत 7 में मिलती है: ''सो हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज

धरता है।'' इन लोगों से ''धीरज धरो'' कहने के लिए याकूब ऐसे शब्द का इस्तेमाल करता है जो दो यूनानी शब्दों के मेल से बना है। पहले शब्द का अर्थ है ''दूर, दूरस्थ, लम्बा'' और दूसरे शब्द का अर्थ ''जनून, गर्मी, रोष, क्रोध'' है। मिलकर दोनों शब्दों से ''सहनशील'' होने का विचार बनता है।

मेरे मन में संदेह है कि याकूब के समय में कई मसीही लोगों में इस गुण की कमी थी। सम्भवतया ईमानदारी से कहें तो हम में से कइयों में इसी गुण की कमी है। बहुत से मसीही लोग उस आदमी की तरह हैं जिसने प्रार्थना की, ''हे प्रभु, मुझे धीरज दे, और मुझे यह अभी देना!'' यह विशेषकर तब सही है जब कोई हमें बुरा कह रहा हो या हमारे बारे में झूठ फैला रहा हो। आपको वह पुरानी कहावत याद है, ''गर्मी मत खाओ, उसे दिखा दो कि तुम्हारा जवाब नहीं।'' आम तौर पर हम जो चाहते हैं वह यही होता है कि गर्मी दिखाओ *और* जवाब दो। जब हम ऐसा करते हैं तो सारा संसार हमें समझाने को आता है जब तक हम भवनाओं पर काबू पा कर अपने आप को सम्भाल नहीं लेते। ये वही भवनाएं और काम हैं जिन्हें याकूब खत्म करने की कोशिश कर रहा है।

इस विचार को बसन्त और गर्मियों के मौसम की बरसात की प्रतीक्षा धीरज से करते हुए किसान के उदाहरण से समझाया जा सकता है। पश्चिमी टैक्सस में $5^1/_2$ वर्ष की सेवकाई में मैंने कपास उगाने वाले किसानों का धैर्य देखा है। भूमि तैयार करने के लिए उन्हें उससे पहले बारिश की आवश्यकता होती है और फसल पकने के लिए पिछली बारिश की। बोआई से पहले बहुत अधिक वर्षा का खतरा भी हो सकता है जिससे बोआई देर से हो या फसल के समय बहुत अधिक बारिश जिससे कटाई रुक जाए। यदि कपास के किसानों में धैर्य (और विश्वास) नहीं होगा तो वे जीवित नहीं रह सकते।

याकूब कहता है कि हमें ''प्रभु के आगमन तक धीरज'' रखना आवश्यक है। प्रभु के ''आगमन'' के लिए शब्द के पीछे की अवधारणा *parousia* वाली है। रोमी साम्राज्य में बहुत बार कोई सरकारी अधिकारी नगरों में जब वह पहुंचता, तो धन सम्पत्ति आदि से जुड़ी दूसरों के प्रति शिकायतें लेकर आने वाले उसके सामने पेश होते थे। उस समय सब गलतियां सुधार ली जातीं। इसे *parousia* कहा जाता। जब यीशु अपने *parousia* में वापस आएगा तो सब आत्मिक गलतियां ठीक कर दी जाएंगी (2 थिस्सलुनीकियों 1:6, 7)। मसीही व्यक्ति को, जिसके साथ दुर्व्यवहार हो रहा है ''धीरज रखना'' चाहिए।

''दृढ़ रहो'' (5:8)

भाइयों को ''दृढ़ रहने'' की ताड़ना करते समय याकूब द्वारा दी गई दूसरी आज्ञा आयत 8 में मिलती है (NIV)। जब चीज़ें गलत हो जाती हैं तो निराश होना आसान होता है। हमारा विश्वास हमारे आस-पास की घटनाओं पर निर्भर करता है, लोग हम से क्या कहते हैं या लोग हमारे साथ कैसा व्यवहार करते हैं। हमारे विश्वास की शक्ति आमतौर पर कमज़ोर हो जाती है, जब हमारे साथ पक्षपातपूर्ण ढंग से व्यवहार किया जाता है, परन्तु याकूब कह रहा है कि हमारे विश्वास से फर्क पड़ता है। वास्तव में अनुवादित शब्दों ''दृढ़ रहो'' का मूल अर्थ ''अपने हृदय को मज़बूत करो'' है। हमारा विश्वास हमारे हृदयों को मज़बूत करेगा ताकि हम दुर्व्यवहार को

सहारने के योग्य हो सकें।

हमें ''दृढ़'' होने के योग्य बनाने के लिए याकूब यह वाक्य जोड़ देता है, ''... क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है।'' आमतौर पर नये नियम में जब हम ऐसे वाक्यों को पढ़ते हैं, तो हम कंधे उचकाते हुए कहते हैं, ''हां, अच्छा है, समय की गणना करने के प्रभु के ढ़ंग में, यह अभी निकट ही है।'' परन्तु मेरा मानना है कि नये नियम के मसीही लोग यीशु के बिल्कुल निकट आने का प्रचार करते थे और ऐसे जीवन बिताते थे, जैसे वह किसी भी समय वापस आ सकता है। मसीही लोगों को आज उसी तरह से जीवन बिताना चाहिए। यदि हमारा जीवन ऐसा हो जैसे यीशु किसी भी समय वापस आ सकता है तो विपत्ति के समय में हमें ''दृढ़ होना'' कठिन नहीं होगा।

''दोष न लगाओ'' (5:9)

तीसरी और नकारात्मक, पहली ताड़ना आयत 9 में है: ''हे भाइयो, एक-दूसरे पर दोष न लगाओ ...।'' याकूब हमें वहीं पर चोट करता है, जहां हम जिस चीज़ के साथ रहते हैं! जब विपत्ति हमारे रास्ते में आती है, विशेषकर हमारे आस-पास के लोगों के दुर्व्यहार के रूप में, विशेषकर हमारे मसीही भाइयों की ओर से, तो शिकायत करना आसान होता है। हमारी पीड़ा हमारे आस-पास के लोगों को सुनाई देती है, जिसमें उन लोगों के सब बुरे गुण बताए जाते हैं जो हमारे साथ वैसे व्यवहार नहीं करते जैसे हमें लगता है कि उन्हें करना चाहिए।

कुड़कुड़ाने वाले, सताने वाले और शिकायत करने वाले सदस्य को क्षमा करना हमारे लिए आवश्यक है। हम ''वह ऐसा ही है,'' या ''उसका व्यक्तित्व ही नकारात्मक है'' जैसी बेकार टिप्पणियां करते हैं। दिक्कत यह है कि हम उसके लिए कुड़कुड़ाने या उसकी अनदेखी करने वाले को ऐसे क्षमा करते हैं, जैसे उसका कुड़कुड़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। परमेश्वर उन बुराइयों को ऐसे नहीं देखता, जैसे उनका कोई महत्व न हो। जब आपके साथ दुर्व्यवहार हो रहा होता है, तब भी परमेश्वर कहता है, तेरा विश्वास तुझे तेरे भाई के विरुद्ध शिकायत करने से दूर रखेगा। जब तक हम बातें करने के इस बुरे ढंग को उतनी गम्भीरता से नहीं लेते, जितनी गम्भीरता से परमेश्वर लेता है, तब तक पापपूर्ण बातें करने वाले सदस्यों के द्वारा कलीसियाएं नष्ट होती रहेंगी।

शिकायत न करने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए, याकूब के द्वारा पवित्र आत्मा चेतावनी देता है कि ऐसा करने वालों का न्याय किया जाएगा। शिकायत करने वालों का यह न्याय इसलिए स्पष्ट है क्योंकि ''न्याय करने वाला द्वार पर ही खड़ा है।'' एक-दूसरे पर हमारी शिकायत करने के कारण यीशु को न्याय करने वाले के रूप में होना कितना भयानक है।

''शपथ न खाना'' (5:12)

याकूब कहता है कि हमारे विश्वास से हमारे बातें करने के ढंग में फर्क पड़ना चाहिए। वह कहता है कि हमें शपथ नहीं खानी चाहिए (5:12)। हमारी ज़बान को बेकाबू करवाकर लोग जब हमारा लाभ उठा रहे हों तो यह कितना आसान होगा। आपको केवल संसार के लोगों के साथ यह जानने के लिए समय बिताना है कि हमारा संसार सचमुच में कितना गंवार है। हमारे विश्वास से फर्क पड़ता है, क्योंकि कठिन से कठिन परिस्थितियों में हम अपनी जीभ पर काबू

रख सकते हैं।

सांसारिकता एक ऐसी आसान और हमारे समाज में स्वीकार किए जाने वाली बुराई है कि यह मसीही लोगों के लिए कूड़ा है। परन्तु याकूब कहता है कि हमारी बातचीत संसार की मसालेदार बातचीत से सजाई हुई नहीं, बल्कि सीधी और स्पष्ट हो। यह त्रासदी ही है जब उस विश्वास में जो वे करते हैं, रुकावट बनते हैं। हमारे विश्वास से हमारे बात करने के ढंग पर फर्क पड़ता है, चाहे हालात कैसे हों।

सारांश

जब हमें प्रभु द्वारा बुलाया जाता है, तो वह हमें फूलों की सेज में लेटने के लिए नहीं बुलाता। मसीही जीवन बिताना कठिन है। विशेषकर यह तब कठिन है जब हमारे साथ उन लोगों द्वारा बुराई की जा रही हो जिन्हें हमारे साथ सही व्यवहार करना चाहिए। हमारा दुरुपयोग उन लोगों द्वारा होने पर जिन्हें हम से प्रेम करने वाला होना चाहिए, हमें (1) धीरज रखना, (2) दृढ़ रहना, (3) दोष न लगाना और (4) शपथ न खाना याद रखना आवश्यक है।

हमें दी गई आशा के लिए हमें उन लोगों के उदाहरण दिए जाते हैं, जिन्होंने कष्ट सहते हुए धीरज बनाए रखा। पहले तो हमें नबियों का ध्यान करने के लिए कहा जाता है। एलिय्याह, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल और होशे पर आने वाली विपत्तियों पर और उनके द्वारा दिखाए गए धीरज पर विचार करें। याकूब अय्यूब के धीरज पर विचार करने के लिए भी कहता है। मेरे विचार से अन्य अनुवादों के बजाय जिनमें ''सहनशीलता'' शब्द इस्तेमाल हुआ है, ''धीरज'' शब्द के इस्तेमाल में NIV बेहतर है क्योंकि कई बार याकूब सहन करने योग्य होने के अलावा कुछ और भी था। सब कुछ होने के बावजूद, अय्यूब ने धीरज रखा। यह उदाहरण हमारे लिए उम्मीद भरे हैं क्योंकि वे हमें दिखाते हैं कि धीरज रखा जा सकता है।

परमेश्वर हमें सामर्थ दे कि हम अपने साथ बुरा होने पर अपने विश्वास को पहचान बनाने दें।